रसूलो पर ईमान लाने का मतलब क्या हैं?

संपादक- मौलाना जलील अहसन नदवी रह.

राहे अमल हिन्दी.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

रसूलो पर ईमान लाने के बाद जरूरी है की इन्सान अपनी खवाहिश, अपने इरादे और अपने दिली रूजहानत को रसूल की लाई हुवी हिदायत के ताबे करदे, कुरान के हाथ मे अपनी खवाहिश की लगाम देदे, अगर कोई ऐसा न करे तो रसूल पर ईमान लाने का कोई मतलब नही. [मिश्कात, रावी अब्दुल्लाह बिन अम्र रदी रिवायत का खुलासा]

◆ बात करने और अखलक का बेहतरीन मेयार

रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया- बेहतरीन कलाम (बात) अल्लाह की किताब और बेहतरीन सीरत मुहम्मदﷺ का सीरत हें जिसकी पैरवी कि जानी चाहिये. [मुस्लिम; रावी जाबिर रदी रिवायत का खुलासा]

◆ सुन्नत और दिल की पाकिज़गी

रसूलुल्लाहﷺ ने कहा ऐ मेरे प्यारे बेटे, अगर तू इस तरह जिन्दगी गुजार सके की तेरे दिल मे किसी की बादखावही न हो तो ऐसी ही जिन्दगी बसर कर, फिर फरमाया और यही मेरा तरीका है की मेरे दिल मे किसी के लिये खोट नही और जिसने मेरी सुन्नत से मुहब्बत की तो बेशक उसने मुझसे मुहब्बत की और जिसने मुझसे मुहब्बत की वो जन्नत मे मेरे साथ रहेगा.

[मुस्लिम; रावी अनस रदी रिवायत का खुलासा]

◆ इत्ताते रसूलﷺ का सही तरीका

तीन आदमी रसूलुल्लाहﷺ की इबादत के बारे मे मालूमात हासिल करने के लिये रसूलुल्लाहﷺ की बीवियो के पास आये, जब उन्हे बताया गया तो उन्होने अपनी इबादत की मिकदार को कम जाना उन्होने अपने दिल मे सोचा की रसूलुल्लाहﷺ से हमारा क्या मुकाबला? उनसे न तो पहले गुनाह हुये और न बाद मे होंगे और हम मासूम नहीं तो हमे जियादा से जियादा इबादत करनी चाहिये. चुनांचे उनमे से

एक ने अपने लिये यह तय किया की वो हमेशा पूरी रात नफल नमाजो मे गुजरेगा, और दूसरे ने यह कहा की मे हमेशा नफ्ली रोजे रखुगा, दिन मे कभी खाना नही खाउंगा और तीसरे ने कहा मे औरतो से अलग रहूंगा, कभी शादी नही करूंगा.

जब रसूलुल्लाहﷺ को इसकी खबर मिली तो आप उनके पास गये और कहा क्या वो तुम ही लोग हो जिन्होंने ने ऐसा ऐसा कहा, फिर रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया यकीनन मे तुमसे जियादा अल्लाह से डरने वाला, और उसकी नाफरमानी से बचने वाला हु, लेकिन देखो मे नफ्ली रोजे कभी रखता हु कभी नही रखता, इसी तरह मे रात मे नवाफिल भी पढता हु और सोता भी हु, और देखो मे बीविया भी रखता हु, तो तुम्हारे लिये खैरियत मेरे तरीके की इत्तेबा मे है और जिसकी निगाह मे मेरी सुन्नत की एहमियत नही, जो मेरी सुन्नत से बेरूखी करे उसका मुझसे कोई ताल्लुक नही. [मुस्लिम; रावी अनस रदी रिवायत का खुलासा]

◆ अल्लाह और रसूलﷺ की मोहब्बत के तकाजे

रसूलुल्लाहﷺ से मुहब्बत की वजह से कुछ साथी ने आपके वुज़ू का पानी लेकर बरकत के लिये चेहरों और हाथ पर मला था यह कोई बुरा काम नही था जिस पर रसूलुल्लाहﷺ उन्हें डांटते, हां आपने उन्हें बताया कि मुहब्बत का उंचा मकाम यह है कि अल्लाह और रसूल ने जो आदेश दिये हें उन पर अमल किया जाये. रसूलुल्लाहﷺ जो दीन लाये हें उसे अपनी जिन्दगी का दीन बनाया जाये जब बात करे तो सच बोले, और जब उनके पास अमानत रखी जाये तो उसे हिफाजत के साथ मालिक के हवाले करे, और पडोसियो के साथ अच्छा सुलूक करे. रसूल की फरमाबरदारी करना रसूल की मुहब्बत का सबसे उंचा मकाम है शर्त यह है कि वह रसूल से दिली लगाव के साथ की जाये. [मिश्कात; रावी अब्दुर रेहमान बिन अबू करडा रदी रिवायत का खुलासा]

◆ ईमान और मोहब्बते रसूलﷺ

आदमी मोमीन तभी बनता है जब रसूल और उनके लाये हुवे

दीन की मुहब्बत तमाम मुहब्बतों पर गालिब आ जाये, बेटे की मुहब्बत किसी और रास्ते पर चलने को केहती है, बाप की मुहब्बत किसी और रास्ते पर चलने को केहती है, और रसूलुल्लाहﷺ किसी दुसरे रास्ते पर चलने को केहते है तो जब आदमी सारी मुहब्बतों और उनकी मांग को ठुकरा कर सिर्फ रसूलुल्लाहﷺ के बताये हुवे रास्ते पर चलने को तैयार हो जाये तो समझ लीजिये की वो पक्का मोमीन है, रसूल से मुहब्बत करने वाला है ऐसा ही आदमी इस्लाम को चाहिये और ऐसे ही लोग दुनिया की तारिख बनाते है, कच्चा ईमान बीवी, बच्चो, बाप, और भाई की मुहब्बतों पर कैची कहां चला सकता है. [मुत्तफक अलैही रावी अनस रदी रिवायत का खुलासा]

◆ मुहब्बते रसूलﷺ और आज़माइश

किसी से मुहब्बत करने और उसे महबूब बनाने का मतलब क्या होता है? यहीं कि उसकी पसन्द को अपनी पसन्द और उसकी नापसन्दीदगी को अपनी नापसन्दीदगी बना दिया जाये महबूब जिस रास्ते पर चलता है उस रास्ते को अपनी जिन्दगी का रास्ता बना दिया जाये, उसका करीबी बनने उसकी संगति

और उसकी खुशी के लिये हर चीज कुर्बान की जाये और कुर्बान करने के लिये तैयार रहा जाये. रसूलुल्लाहﷺ को महबूब बनाने का मतलब ये है की आप का एक एक नकशे कदम और रास्ते का एक एक निशान मालूम किया जाये और उस पर चला जाये, आप ने जिस रास्ते मे चोटें खाई है, उस रास्ते मे चोटें खाने की ताकत पैदा की जाये, गार ऐ हिरा भी आप की राह है और बदर वा हूंनैन भी आप की राह है. दीन की राह पर चलने के नतीजे मे गरीबी वा फाका की मार पडेगी, और मालूम है की रोजी की मार सबसे बडी मार है उसका मुकाबला सिर्फ भरोसा और अल्लाह की मुहब्बत के हथीयार से किया जा सकता है, मोमीन ऐसे वकत मे ये सोचता है की अल्लाह मेरा वकील है मे बेसहारा नही हूं, और मे गुलाम हूं, गुलाम का काम सिर्फ अपने मालिक की मरजी पूरी करनी है, और ये की मे जिस काम पर लगा हुवा हूं मेरी मेहनत मारी नही जा सकती उसका इस ढंग पर सोचना हर मुसीबत को आसान कर देता है, शैतान के हर हथीयार को बेकार कर देता है. [तिर्मिजी; रावी अब्दुल्लाह इबने मुगहफ्फल रदी रिवायत का खुलासा]